M.Ed - IV Sem.

S.C - 4

और देखता है। तथा निरन्तर भावी तरक्की करने मे सहायता करता है।

(f) संसाधनो के प्रयोग को उन्नत करता है (Promotes Utilization of Resources) →: हमारा देश गरीब है अतः शिक्षा के लिए निधि सीमित है और रहेगी। हमारा कर्त्तव्य शैक्षिक अदा और प्रदा (output with the inputs) के बीच सन्तुलन बनाना ही नही अपितु प्रत्येक रुपये का अधिकतम सद-उपयोग करना भी है। पुस्तकालय में पुस्तकें एवं प्रयोगशाला में उपकरण केवल वहाँ की शोभा बढ़ाते है विज्ञान के अनेक उपकरण केवल शोभा बढ़ाने का कार्य करते है। संस्थागत नियोजन इस स्थिति को दूर करता है तथा स्टाफ और विद्यार्थियो में इन संसाधनो, सुविधाओ तथा सेवाओं को पूरी तरह प्रयोग मे लाने की दक्षता उत्पन्न करता है। यह अध्यापको मे अन्तिम उत्पादन (विद्यार्थी) में सुधार लाने की अभिवृत्ति विकसित करता है।

(g) स्थानीय समुदायों के लिए लाभप्रद सिद्ध होता है। (Proves Beneficial to the Local community) →: संस्थागत नियोजन अपने वातावरण के साथ संस्था के सम्बधों को घनिष्ठ बनाने मे सहायता करता है यदि नियोजन दक्ष है एवं सामान्य दृष्टिकोण रखता है तो सफलतापूर्वक राजनैतिक दबावों का सामना कर सकता है। यदि संस्था अपनी योजनाओ द्वारा स्थानीय समुदाय के लाभ और कल्याण के लिए अपने विचार और कार्यक्रम प्रस्तुत करती है तो यह उनका समर्थन और सहयोग प्राप्त कर सकती है तथा अध्यापक एवं प्रशासक समाज मे अच्छी स्थिति और मान प्राप्त कर सकते है।

Scanned by CamScanner

संस्थागत नियोजन की प्रक्रिया

(Procedure of Institutional Planning) → संस्थागत नियोजन के दो पक्ष है—

(1) निर्माण एवं क्रिया-वयन (Formulation and Implementation)

संस्थागत नियोजन राष्ट्रीय नीति, शैक्षिक लक्ष्य और उद्देश्य और आधुनिकतम शैक्षिक सिद्धान्तो पर आधारित होना चाहिए। यह समुदाय की आवश्यकताओं, संसाधनों की उपलब्धता तथा मानव शक्ति के उपयोग से भी सम्बन्धित होना चाहिए। इसमें स्टाफ, विद्यार्थियों अध्यापन-अधिगम के कार्यक्रमों तथा प्रक्रियाओं एवं संस्थाओं के संसाधनो के सुधार के लिए संपीड़क आवश्यकताओं (Pressing needs) को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

संस्थागत नियोजन को वास्तविक सुधार के रूप में लिया जाना चाहिए न कि केवल दिखाने के रूप में। महत्व के क्रम में वरीयता प्रदान की जानी चाहिए। उच्च प्राथमिकता युक्त सेवाओं जैसे अनुदेशन, पाठ्यक्रम, पुस्तकालय तथा सामाजिक क्रियाओं को दी जानी चाहिए। निम्न वरीयता ऐसे कार्यों को जैसे-विद्यालय भवन आदि को दी जानी चाहिए। परियोजनाओं में निरन्तरता रखी चाहिए तथा अनुभव के प्रकाश में उनमें परिवर्तन किया जाना चाहिए।

(2) मूल्यांकन एवं रूपान्तर (Evaluation and modification)

योजना का कार्यान्वयन प्रारम्भ होने पर उसका समय-2 पर मूल्यांकन होते रहना आवश्यक है। यह कमियो को जानने तथा निदानात्मक मार्ग अपनाने के लिए नितान्त आवश्यक है। यह अच्छे बिन्दुओं को भी उभारता है सफलता कर्मचारियों को और अच्छा कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करती है लेकिन जब असफलता मिलती है तो आवश्यक रूपान्तर करने में किसी प्रकार की

झिझक नहीं होनी चाहिए। संस्थागत नियोजन का मुख्य उद्देश्य संस्था की कार्य प्रणाली में सुधार करना तथा मूल्यांकन का उद्देश्य योजनाओं में सुधार करना है।

इन दोनों कार्यों, निर्माण एवं मूल्यांकन में पैनल निरीक्षण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि एक नवीन चिन्तन विकसित किया जाये।

(vii) चल योजना अवधारणा (The rolling Plan Concept) :-

भारत में नियोजन ने एक नवीन अवधारणा "चल योजना" अवधारणा को जन्म दिया। इसकी निम्न दो विशेषताएं हैं –

1. पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत वार्षिक लक्ष्य भी क्षेत्रीय विकास एवं उत्पादन के लिए निर्धारित किये जाते हैं।
2. पंचवर्षीय योजना का क्षैतिज प्रत्येक वर्ष के अन्त में इनमें से प्रत्येक वर्ष के लिए क्षेत्रीय लक्ष्यों को निर्धारित कर एक वर्ष के लिए और बढ़ा दिया जाता है।

चल योजना की इस अवधारणा का जन्म पहली पंचवर्षीय योजनाओं की कमियों और अनुपयुक्ताओं के कारण हुआ। योजना के मध्य में मूल्यांकन के समय पर कुछ प्रयास किये जा सकते थे लेकिन इसका वास्तविक मूल्यांकन क योजना के अन्त में ही सम्भव था। इन कठिनाईयों को दूर करने के लिए 1978-83 की योजना के लिए चल योजना (Rolling Plan) व्यवस्था को प्रारम्भ किया और अपनाया गया। इस योजना को लागू करने पर परिस्थितियों की आवश्यकताओं, अनिश्चितताओं तथा तथा उतार-चढ़ाव का सामना किया जा सकता है। 21 April 1980 को इस योजना को समाप्त कर दिया गया।

Scanned by CamScanner

Procedure and technique of Planning
(नियोजन की प्रक्रिया एवं तकनीकें)

→ कोई भी अच्छी योजना सदैव ही योजना को तैयार करने मे अपनाई गयी वैज्ञानिक और व्यापक प्रक्रिया का परिणाम रही है, इसको बहुत अधिक चिन्तन, आंकड़ो का संकलन, विश्लेषण तथा प्रयासो की आवश्यकता होती है। पिछले कुछ वर्षों में नियोजन की पूरी प्रौद्योगिकी विकसित हो चुकी है इसमें अनेक पदो एवं विषयो को ध्यान में रखा जाना शामिल है।

वास्तव में किसी योजना का सुधार एवं उसकी गुणवत्ता उस प्रक्रिया की गुणवत्ता पर निर्भर करती है जो उस योजना को तैयार करती है। अपर्याप्त आंकड़े, अवैध व्यवस्थाओं या अविश्वसनीय प्रक्रियाओं पर आधारित योजनाऐं उन योजनाओं से अधिक अच्छी नही होती जो भावनाओ और अवास्तविक आशाओ पर आधारित हैं, यह एक गलत धारणा है कि एक बार तैयार की गयी योजना मे कभी भी परिवर्तन नहीं होना चाहिए अपितु इसे लचीला बनाया जाना चाहिए ताकि इसे आवश्यकता पड़ने पर परिवर्तित किया जा सके।

ऐसे दो तत्व हैं या विशेषताए हैं जो प्रत्येक नियोजन प्रौद्योगिकी में होने चाहिए—

(a) यह व्यवस्थित होनी चाहिए।

(b) यह व्यापक होनी चाहिए।

नियोजन प्रक्रिया का तात्पर्य है " योजना बनाने के लिए योजना " (Plan to plan) इसका अर्थ है कि नियोजन क्रिया को किसी स्तर — उच्च स्तर या निम्न स्तर या दोनो स्तरों पर किसी न किसी रूप में प्रारम्भ किया जाना चाहिए। इसमें सहायक संसाधनो को एकत्रित किया जाना चाहिए, युक्तियों एवं उपकरणों को ढूंढा जाना चाहिए, कार्यकारी समय की शुरुआत की जानी चाहिए।

Scanned by CamScanner

शैक्षिक नियोजन में निहित क्रियाओं की मूलभूत श्रृंखला में सूचनाऐं एकत्रित करना, इन सूचनाओं को तैयार करना, तथा इनकी व्याख्या करना है। नियोजन की गुणवत्ता उपलब्ध आंकड़ों की उपयुक्तता, आवश्यक सूचनाओं की प्राप्ति, जनता तक आंकड़ों को पहुंचाने की सत्ता, आंकड़ों को तैयार (प्रसंस्करण) (Processing) करने के मामले, आंकड़ों की व्याख्या की वैधता आदि के द्वारा बहुत अधिक प्रभावित होती है।

* द्वितीय विश्वयुद्ध के विध्वंश के कारण तुरन्त सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की आवश्यकता महसूस की गयी। नियोजन को विश्व के लगभग सभी राजनैतिक और प्रशासनिक नेताओं की विशाल स्वीकृति और समर्थन प्राप्त हुआ। नियोजित विकास में इस सामान्य रुचि ने शैक्षिक नियोजकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि शिक्षा की गुणवत्ता राष्ट्रीय विकास से घनिष्ठ रूप से सम्बंधित है और राष्ट्रीय योजनाऐं भी उस हद (सीमा) तक सफल है जिस सीमा तक शैक्षिक योजनायें सफल है। अतः यह सिद्ध हो गया कि शिक्षा के सभी क्षेत्रों, प्राथमिक, माध्यमिक तथा विश्वविद्यालय का सन्तुलित ढंग से विकास होना चाहिए।

शैक्षिक प्रयासों का सम्बन्ध सामाजिक और आर्थिक विकास से होना चाहिए, शिक्षा के संगठनात्मक ढाँचे, पाठ्यवस्तु तथा विधियों मे गुणात्मक और परिमाणात्मक दोनो प्रकार का सुधार होना चाहिए तथा शिक्षा में निवेश व्यय व्यक्तियों और समाज की आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओ की पूर्ति के रूप में लाभांश प्रदान कर सकें।

Scanned by CamScanner